टिप्पणी

4

सशस्त्र बल

सैनिकों को अनेक प्रकार की चुनौतियों जैसे बर्फीले ग्लेशियर्स, रेतीले रेगिस्तान, पहाड़ी जंगल और विस्तृत समुद्रों का सामना करना पड़ता है। वे ऐसी चुनौतियों का हँस कर सामना करते हैं और देश के लिए कोई भी कुरबानी देने को तैयार रहते हैं।

सेना के सभी स्तरों पर आपसी भाईचारे और सहयोग की भावना बनी रहती है। सैनिक तीन 'न' अर्थात नाम (व्यक्तिगत सम्मान), नमक (राष्ट्र के प्रति वफादारी) और निशान (अपनी यूनिट/रेजीमेण्ट के निशान) के लिए अपनी जान दे देते हैं। दुश्मन से लड़ते हुए वे अपनी वीरता दर्शाते हैं। सेना में जाति, धर्म अथवा किसी अन्य आधार पर कोई भेद-भाव नहीं होता। इससे टीम भावना और एकता सुनिश्चित रहती है। वे अपमान के बदले प्राय: मौत को चुनते हैं। साफगोई, ईमानदारी और आत्मसम्मान प्रत्येक सैनिक का नैतिक बल होता है।

इस अध्याय में हम भारतीय सेना की विभिन्न कमाण्ड्स तथा सशस्त्र सेना के मूल्यों के बारे में विस्तार से जानेंगे। संगठनात्मक ढांचे के अध्ययन से पूर्व हम भारतीय सेना के नैतिक मूल्यों की परख करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- भारतीय सेना की भूमिका और संगठनात्मक ढांचे को स्पष्ट कर सकेंगे;
- भारतीय जल सेना की भूमिका और ढांचे का वर्णन कर सकेंगे;
- वायु सेना की भूमिका और ढांचे की व्याख्या कर सकेंगे।

4.1 भारतीय सेना की भूमिका

भारतीय सेना को हमारे देश की क्षेत्रीय एकता तथा बाहरी आक्रमण अथवा आन्तरिक गड़बड़ी के समय देश की संप्रभुता की रक्षा करनी होती है। सेना, प्राकृतिक अथवा मानवीय आपदाओं में स्थानीय प्रशासन को सहायता भी प्रदान करती है। भारतीय सेना अपनी टुकडियों को भेजकर संयुक्त राष्ट्र के शान्ति मिशनों में भी भाग लेती हैं। भारतीय सेना यहाँ उल्लिखित भूमिकाओं को निभाने के लिए सदैव उच्च कोटि की कार्यवाई के लिए तैयार रहती है।

4.1.1 भारतीय सेना की संरचना

भारतीय सेना को 7 कमाण्ड्स में संगठित किया गया है जिनमें 6 कमाण्ड कार्रवाई के लिए तथा एक कमाण्ड प्रशिक्षण के लिए होता है। इनके नाम हैं-वेस्टर्न कमाण्ड, ईस्टर्न कमाण्ड, नार्थर्न कमाण्ड, सदर्न कमाण्ड, साऊथ वेस्टर्न कमाण्ड, सेन्ट्रल कमाण्ड और ट्रेनिंग कमाण्ड

4.1 वेस्टर्न कमाण्ड (मुख्यालय-चण्डी मन्दिर)

4.2 ईस्टर्न कमाण्ड मुख्यालय-कोलकाता)

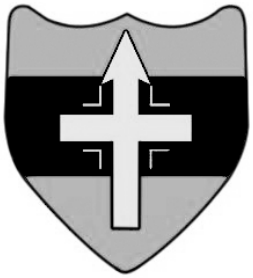

4.3 नार्दर्न कमाण्ड (मुख्यालय-ऊधमपुर)

4.4 सदर्न कमाण्ड (मुख्यालय-पुणे)

4.5 साऊथ वेस्टर्न कमाण्ड (मुख्यालय-जयपुर)

4.6 ट्रेनिंग कमाण्ड (मुख्यालय-शिमला) (यह इकलौती गैर कार्रवाई कमाण्ड है क्योंकि इसके अन्तर्गत तीनों सेनाओं के प्रशिक्षण संस्थान आते हैं।)

4.7 सेन्ट्रल कमाण्ड (मुख्यालय-लखनऊ)

प्रत्येक कमाण्ड का नेतृत्व एक जनरल आफिसर कमाण्डिंग इन चीफ करता है। उसका रैंक 'लेफ्टिनेंट जनरल' होता है।

4.1.2 सेना के सब-डिवीजन

इससे आगे सेना के सब डिवीजन होते हैं जहां सैनिकों को युद्ध लड़ने वाले बल के रुप में वर्गीकृत किया जाता है। युद्ध करने वाली सेना में पैदल और सशस्त्र कोर्पस् होतें हैं-इसके अतिरिक्त युद्ध सहायक एवं एक सेवा यूनिट होती है।

थल सेना को निम्नलिखित तरीके से संगठित किया गया है-

सेक्शन - 10 सैनिकों से एक सेक्शन बनता है।

प्लाटून - 2 सेक्शन मिला कर एक प्लाटून बनती है जिसका मुखिया एक जूनियर कमीशन्ड आफिसर (JCO) होता है।

कम्पनी - 3 प्लाटून से एक कम्पनी बनती है जिसका मुखिया कम्पनी कमाण्डर होता है जिसका रैंक मेजर अथवा लेफ्टीनेंट कर्नल होता है।

बटालियन - चार कम्पनियों से एक बटालियन बनती है। यह पैदल सेना की प्रमुख योद्धा यूनिट होती है जिसका मुखिया बटालियन कमाण्डर होता है जो कर्नल रैंक का होता है।

ब्रिगेड - तीन बटालियनों से एक ब्रिगेड बनता है जिसका मुखिया ब्रिगेडियर रैंक का होता है।

डिवीजन - तीन से चार ब्रिगेड मिला कर एक डिवीजन बनता है जिसका मुखिया मेजर जनरल रैंक का अधिकारी होता है जिसे GOC (डिविजन कमाण्डर) कहा जाता है। भारतीय सेना में इस समय 37 डिवीजन हैं जिनमें पैदल, पर्वतीय, बखतरबन्द, तोपखाना और पुनर्गठित आर्मी प्लेनस् इन्फैन्ट्री डिवीजन अर्थात RAPIDS शामिल हैं।

कोर्प्स - तीन से चार डिवीजन मिला कर एक कोर्प्स बनती है। लेफ्टीनेंट कर्नल रैंक का अधिकारी इस का GOC (कोर्प्स कमाण्डर) के रुप में नेतृत्व करता है।

कमाण्ड - प्रत्येक कमाण्ड का नेतृत्व लेफ्टीनेंट जनरल रैंक का अधिकारी 'जनरल आफिसर कमाण्डिग इन चीफ' के रुप में काम करता है। भारत में 7 कमाण्ड हैं जिनमें से 6 कार्रवाई करने वाली तथा एक प्रशिक्षण कमाण्ड है जिसे ARTRAC (आर्मी ट्रेनिंग कमाण्ड) कहा जाता है।

भारत में तीन सेवा कमाण्ड्स भी हैं जिनके नाम हैं स्ट्रेटिजिक फोर्सिस कमाण्ड, इन्टेग्रेटिड डिफेन्स स्टाफ और अण्डमान-निकोबार कमाण्ड। इनका नेतृत्व बारी-बारी से थल, जल और वायु सेना के अधिकारी करते हैं।

4.1.3 भारतीय सेना का संगठन

भारतीय सेना के दो भाग हैं-युद्ध करने वाली (लड़ाका) सेना और सेवाएं।

लड़ाका सेना

यह सेना की लड़ाकू सेना है। इसमें शामिल है :

1. **बख़्तरबन्द कोर्पस** - इसने भारत में घुड़ सेना का स्थान लिया है। यह आधुनिक सेना की प्रमुख लड़ाका सेना है। इसके पास मुख्य हथियार टैंक होते हैं। यह सेना पैदल सेना की तब बहुत सहायता करती है जब वे शत्रु से लड़ रहे होती है; तब टैंक उनको सुरक्षा कवच प्रदान करते हैं।

2. **यान्त्रिक (मेकेनाइज़ड) इन्फैन्ट्री** - यह भारतीय सेना की नवीनतम शाखा है।

3. **थल सेना** - यह लड़ाकू टुकड़ियां हैं जो जीती गई भूमि पर कब्जा करती हैं। भारतीय सेना के लड़ाकू बलों में यह सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण शाखा है। इसको युद्ध सहायक सेनाओं से मदद प्राप्त होती है, जो निम्नलिखित हैं-

   - **तोपखाना** - गोले दागने की शक्ति प्रदान करने वाली सभी तोपें इसके अन्तर्गत होती हैं। इनका प्रयोग शत्रु के रक्षा कवच को नष्ट करने तथा शत्रु की स्थिति पर कब्जा करने के लिए, तथा अपनी पैदल सेना को सुरक्षा कवच प्रदान करने के लिए किया जाता है।
   - **कॉपस आफ इंजीनियर्स** - इन्हें सैपर्स भी कहा जाता है। ये इंजीनियर्स होते हैं जो माइन्स बिछाने और हटाने, पुल और सड़कें बनाने तथा विस्फोटकों से निपटने का काम करते हैं। उनका मोटो 'सर्वत्र' अर्थात 'हर जगह' है। वे सेना की टुकड़ियों की गति को बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।
   - **कॉपस आफ आर्मी एयर डिफेन्स्** - हवाई जहाजों के आ जाने से युद्ध क्षेत्र के स्वरूप में आए परिवर्तन के बाद वायु रक्षा अपरिहार्य हो गई है। उनका मोटो है 'आकाशे शत्रुन् जहि- (शत्रु को आकाश में ही परास्त करो)
   - **आर्मी एविएशन कॉपस** - 'सुवेग व सुदृढ़' मोटो वाली सबसे युवा भारतीय सशस्त्र कॉपस के पास हेलीकाप्टर हैं जो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों, मौसमों और चुनौतियों के बीच काम कर सकते हैं। इनके पास शत्रु को उसकी सीमा में ही देख सकने की योग्यता है।
   - **कॉपस आफ सिगनलस** - सूचना के इस युग में, सेनाओं को अपनी वर्तमान सूचना संचार और प्रौद्योगिकी ढांचे को मजबूत करना होता है ताकि वे दूर-दराज़ क्षेत्रों में सैनिकों से सम्पर्क को सुनिश्चित कर सकें और युद्ध एवं शान्ति में सेना को साईबर सुरक्षा प्रदान कर सकें। यह काम कॉपस आफ सिगनल्स द्वारा किया जाता है। उनका मोटो 'तीव्र चौकस' है अर्थात 'अत्यधिक चौकन्ना'।

सेवाएं : युद्ध और युद्ध सहायक सेना के अतिरिक्त शेष सेना को सेवाओं के अन्तर्गत संगठित किया जाता है। उनका मुख्य कार्य सेना तक आवश्यक सामग्री (हथियार, गोला-बारूद, राशन इत्यादि) पहुँचाना होता है।

सेवाओं में निम्नलिखित विभाग शामिल होते हैं-

1. आर्मी सर्विस कॉपस
2. आर्मी मेडिकल कॉपस
3. आर्मी डेन्टल कॉपस
4. आर्मी आर्डिनेन्स
5. कॉपस आफ इलैक्ट्रानिकस एण्ड मेकेनिकल इंजीनियर्स
6. रिमाऊन्ट एण्ड बेटरनेरी कॉपस

7. मिलिट्री फॉर्मस सर्विस
8. आर्मी एजुकेशन कॉपस
9. कॉपस आफ मिलिट्री पुलिस
10. पायनियर कॉपस
11. आर्मी पोस्टल सर्विस कॉपस
12. इन्टेलिजेन्स कॉपस
13. जज एडवोकेट जनरलेस विभाग
14. मिलिट्री नर्सिंग सर्विस

पाठगत प्रश्न 4.1

1. सैनिकों के हृदय में तीन (Ns) के होने का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. उस स्थान का नाम लिखिए जहां आर्मी की ट्रेनिंग कमांड स्थित है। इनके कार्यों की व्याख्या कीजिए।
3. बटालियन का क्या अर्थ है?
4. कॉपस आफ आर्मी एयर डिफेन्स की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

4.2 भारतीय नौ सेना (नेवी)

भारतीय जल सेना का आदर्श वाक्य (मोटो) है- 'शं नो वरुण:' ''सागरों के देवता हम पर कृपा बनाए रखें।'' इसे भारत के भू-भाग को घेरे समुद्र की रक्षा करने का कार्य सौंपा गया है।

4.2.1 नौ सेना की भूमिका

इसकी चार प्रकार की भूमिकाएं है, जिनमें केवल समुद्र में युद्ध लड़ना ही नहीं अपितु इससे बढ़कर आपदा में सहायता करना, बचाव कार्य और मानवीय सहायता प्रदान करना शामिल है।

नौ सेना को केवल शत्रु के विरुद्ध अपनी शक्ति प्रयोग करने का दायित्व नहीं सौंपा गया, अपितु इसे भारतीय क्षेत्र और समुद्री व्यापार की रक्षा भी करनी होती है।

जल कूटनीति जल सेना की एक महत्वपूर्ण भूमिका है, जहाँ जल सेनाओं के संयुक्त अभ्यासों तथा मित्र देशों में समुद्री जहाज को भेज कर अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाया जाता है।

इसके कार्यों में समुद्रों में कानून व्यवस्था को बनाए रखना तथा डकैती जैसे अपराधों को रोकना भी है।

हितकारी भूमिका - यद्यपि नौ सेना, सेना का एक अंग है परन्तु यह कई गैर सैन्य कार्य भी करती है। इनमें मानवीय सहायता, आपदा राहत कार्य जैसे लोगों को मुसीबत वाले क्षेत्रों से दूर ले जाना, प्राकृतिक संकटों जैसे बाढ़, चक्रवात और भूकम्प से प्रभावित लोगों तक राहत व अनिवार्य सामग्री की आपूर्ति करना, मुसीबत में फँसी नावों और लोगों की खोज एवं सहायता करना इत्यादि।

दूसरे देशों के लिए भी तटीय और सागरीय क्षेत्रों की मैपिंग तथा हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण करना।

4.2.2 भारतीय नौ सेना की संरचना

भारतीय नौ सेना को तीन कमाण्ड में बांटा गया है।

वेस्टर्न नेवल कमाण्ड – मुख्यालय मुम्बई

ईस्टर्न नेवल कमाण्ड – मुख्यालय विशाखापत्तनम

सदर्न नेवल कमाण्ड – मुख्यालय कोच्चि

प्रत्येक नौ सेना कमाण्ड का मुखिया एक फ्लैग आफिसर कमान्डिंग इन चीफ (FOC-in-C) होता है। उसका रैंक 'वाईस एडमिरल' होता है।

4.2.3 भारतीय नौ सेना का संगठन

मुख्य रूप से नौ सेना को निम्नलिखित शाखाओं में बांटा गया है।

- कार्यकारी (एक्ज़िक्यूटिव)
- अभियान्त्रिकी (इंजीनियरिंग)
- संभार तन्त्र (लोजिस्टिक्स)
- शिक्षा
- चिकित्सा

नौ सेना के अधिकारियों को विशेष ज्ञान और प्रशिक्षण के आधार पर कार्यकारी, संचार, जहाजरानी, संभार इत्यादि की विभिन्न शाखाओं में आवश्यक विभिन्न भूमिकाओं में नियुक्त किया जाता है। जैसे कार्यकारी, संचार, जहाजरानी, संभार इत्यादि।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. भारतीय नौ सेना का आदर्श वाक्य (मोटो) लिखिए।

   .....

2. ईस्टर्न नेवल कमाण्ड का मुख्यालय कहाँ स्थित है?

   .....

3. भारतीय सेना के हितकारी कार्यों के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न कार्यों का वर्णन कीजिए।

   .....

   .....

4.2 भारतीय वायु सेना

भारतीय वायु सेना विश्व की चौथी सबसे बड़ी सेना है। इसमें आधुनिक हवाई जहाज और सुप्रशिक्षित उड़ान (flying) बल है जो हमारे राष्ट्र के आकाश को रक्षा प्रदान कर सकता है।

4.3.1 भारतीय वायु सेना की भूमिका

भारतीय वायु सेना की प्रमुख भूमिका भारतीय वायु क्षेत्र को सुरक्षित बनाना तथा घुसपैठियों से बचाना है। वायु सेना को युद्ध के समय हवाई लड़ाई भी करनी होती है। वह दूर दराज़ क्षेत्रों में टुकड़ियां तैनात करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा संभारण में भी सहायता करती है। यह कार्रवाई के दौरान नौ सेना और थल सेना को भी हवाई सहायता प्रदान करती है।

मानवीय दृष्टि से संकट और आपदा के समय नागरिकों का बचाव करना भी इसकी प्रमुख भूमिका है। गृह युद्ध अथवा अन्य संकटों में भारतीय नागरिकों को अन्य देशों से निकालना भी भारतीय वायु सेना का एक प्रमुख कार्य है।

भारतीय वायु सेना राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री को हवाई यातायात उपलब्ध करवाती है।

4.3.2 भारतीय वायु सेना की संरचना

भारतीय वायु सेना को तीन शाखओं में बाँटा गया है- जिनके नाम हैं फ्लाईंग ब्रांच (उड़ान शाखा), टेक्नीकल ब्रांच (तकनीकी शाखा), ग्राऊंड ब्रांच (जमीनी शाखा)

भारतीय वायु सेना को पाँच आप्रेशनल (कार्रवाई) कमाण्डों तथा दो फंक्शनल (कार्यात्मक) कमाण्डों में विभाजित किया गया है। फंक्शनल कमाण्डों में बैंगलुरु में ट्रेनिंग कमाण्ड और नागपुर में मेनटेनेंस कमाण्ड हैं। फंक्शनल कमाण्डों का मुख्य कार्य मशीन और मनुष्यों को युद्ध के लिए तैयार रखना है। प्रशिक्षण में लड़ने का प्रशिक्षण (भिन्न भिन्न जहाजों पर काम करने का प्रशिक्षण) मिग तथा अन्य लड़ाकू जहाजों को उड़ाने के लिए विशेष तथा उच्च कोटि का प्रशिक्षण, हेलीकाप्टर प्रशिक्षण तथा यातायात एयर क्राफ्ट प्रशिक्षण शामिल होता है।

पाँच आप्रेशनल कमाण्ड इस प्रकार हैं-

सेन्ट्रल एयर कमाण्ड - मुख्यालय इलाहाबाद (उ0प्र0)

ईस्टर्न एयर कमाण्ड - मुख्यालय शिलांग (मेघालय)

सदर्न एयर कमाण्ड - मुख्यालय, थिरुवन्तपुरम

साऊथ वेस्टर्न एयर कमाण्ड - मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

वेस्टर्न एयर कमाण्ड -मुख्यालय दिल्ली

वायुसेना की दो अतिरिक्त कमाण्ड हैं जो प्रशिक्षण एवं जहाज़ों के रख-रखाव का कार्य करती हैं-

एयर फोर्स ट्रेनिंग कमाण्ड, बैंगलुरु

मेनटेनेन्स कमाण्ड, नागपुर

प्रत्येक कमाण्ड के भिन्न-भिन्न स्थानों पर एयर फोर्स स्टेशन अथवा बेस स्थित हैं।

प्रत्येक कमाण्ड का मुखिया एक एयर आफिसर कमाण्डिंग इन चीफ (AOE-in-C) होता है। इस पद का दायित्व एक एयर मार्शल के पास होता है।

4.3.3 भारतीय वायु सेना का संगठन

सेना की भांति वायु सेना के पास भी पर्याप्त लड़ाका यूनिट्स होती हैं। इनमें से प्रत्येक यूनिट को एक समूह का हिस्सा बनाकर एक कमाण्ड के अन्तर्गत रखा जाता है। प्रत्येक कमाण्ड के अर्न्तगत निम्नलिखित सब डिवीजन होते हैं-

सेक्शन - यह एयर फोर्स की सबसे छोटी ईकाई (यूनिट) है। तीन जहाज़ों से एक सेक्शन बनता है। इसका मुखिया एक फ्लाईट लेफ्टीनेन्ट होता है।

फ्लाईट - दो सेक्शन से एक फ्लाईट बनता है। इसका मुखिया एक स्कवाड्रन लीडर होता है।

स्कवाड्रन - यह दो प्रकार के होते हैं-फ्लाईग स्कवाड्रन और ट्रांस्पोर्ट स्कवाड्रन। तीन फ्लाईट से एक स्कवाड्रन बनता है। लड़ाका स्कवाड्रन में 18 जहाज़ों का मुखिया एक कमांडिंग आफिसर होता है, जिसका रैंक विंग कमांडर अथवा ग्रुप कैप्टन होता है। ट्रांस्पोर्ट स्कवाड्रन का मुखिया ग्रुप कैप्टन ही होता है।

विंग - दो या तीन स्कवाड्रनों से एक विंग बनता है। विंग प्राय: किसी एक एयर फोर्स स्टेशन में स्थित होता है। विंग की कमाण्ड एक ग्रुप कैप्टन/एयर कमाडोर के हाथ में होती है।

स्टेशन - एक विंग और एक या दो स्कवाड्रन से एक स्टेशन बनता है। इसकी कमाण्ड एक एयर कमाडोर के हाथ में होती है। बड़े स्टेशनों की कमाण्ड एयर वाईस मार्शल के हाथों में होती है।

कमाण्ड - एक आप्रेशनल कमाण्ड के पास नौं या दस बेस अथवा स्टेशन हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.3

1. भारतीय वायु सेना के पास कितनी आप्रेशनल कमाण्ड हैं?

   .....

2. 'स्कवाड्रन' पद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

   .....

3. भारतीय वायु सेना की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

   .....

आपने क्या सीखा

- भारतीय सेना को दो भागों में संगठित किया जाता है। एक योद्धा सेना और दूसरा सेवा प्रभाग। योद्धा सेना, सेना का लड़ाका बल होता है और इसमें (i) बख़्तरबन्द कॉपस, (ii) मेकेनाईज़ड पैदल सेना, (iii) पैदल सेना होती है। लड़ाका सेना के अतिरिक्त सेना

को सेवाओं के अन्तर्गत संगठित किया जाता है। इनमें (i) आर्मी सेवा कॉपस, (ii) आर्मी मेडिकल कॉपस, (iii) आर्मी डेन्टल कॉपस, (iv) आर्मी आर्डिनेन्स कॉपस, (v) कॉपस आफ इलैक्ट्रानिक्स एण्ड मेकेनिकल इंजीनियर्स, (vi) रिमाऊन्ड एण्ड वेटेरनिटी कॉपस, (vii) मिलिट्री फार्म्स सर्विसिस, (viii) आर्मी एजुकेशन कॉपस, (ix) कॉपस आफ मिलिट्री पुलिस, (x) पायनियर कॉपस, (xi) आर्मी पोस्टल सर्विसिस कॉपस, (xii) इन्टेलिजेन्स कॉपस, (xiii) जज एडवोकेट जनरल विभाग, (xiv) मिलिट्री नर्सिंग सर्विस।

भारतीय नौ सेना का आदर्श वाक्य (मोटो) है 'शं नो वरुण:'। यह देश की सुरक्षा के लिए भी लड़ती है और प्राकृतिक आपदाओं एवं बचाव कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नौ सेना को तीन कमाण्डों में बांटा जाता है।

- भारतीय वायु सेना विश्व की चौथी बड़ी सेना है। इसको पाँच आप्रेशनल और दो फंक्शनल कमाण्ड में बांटा गया है।
- वायु सेना का संगठन सेक्शन से शुरु होकर फ्लाईट, स्कावड्रन, विंग और स्टेशन तक पहुंचता है।

पाठान्त प्रश्न

1. भारतीय सेना के विभिन्न डिवीज़नों का वर्णन कीजिए।
2. भारतीय नौ सेना की विभिन्न भूमिकाएं स्पष्ट कीजिए।
3. भारतीय वायु सेना के संगठनात्मक ढांचे की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 1. नाम (आत्मसम्मान और नाम), नमक (देश के प्रति वफादारी) और निशान (यूनिट/रेजीमेण्ट/देश का ध्वज)

2. प्रशिक्षण कमाण्ड शिमला में स्थित है। यह सभी सेवाओं का प्रशिक्षण संस्थान है।

3. चार कम्पनियों से एक बटालियन बनती है। कम्पनी, सेना की मुख्य लड़ाका इकाई है और इसकी कमाण्ड कर्नल रैंक के अधिकारी बटालियन कमाण्डर के हाथ में होती है।

4. हवाई जहाजों के आने से, युद्ध क्षेत्र के चरित्र में बदलाव आने से हवाई रक्षा बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। उनका मोटो (आदर्श वाक्य) 'आकाशे शत्रुन जहि' शत्रु को आकाश में हराएं। वे पहले आने और अन्त में जाने के सिद्धान्त का पालन करते हैं। इसका अर्थ है कि वे लड़ने वाली यूनिट्स को प्रारम्भिक कवच प्रदान करेगी और अपनी सम्पतियों की रक्षा करते हुए शत्रु की परिसम्पतियों पर आक्रमण करेगी।

4.2 1. 'शं ने वरुण:' अथवा सागरों का देव हम पर कृपा दृष्टि रखें।

2. 'ईस्टर्न नेवल कमाण्ड' विशखपट्टनम में स्थित है।

3. भारतीय नौ सेना हितकारी कार्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य करती है।

- मानवीय सहायता और आपदा राहत कार्य जैसे मुसीबत वाले क्षेत्रों से लोगों को निकाल कर ले जाना, प्राकृतिक संकट वाले स्थानों जैसे बाढ़, चक्रवात और भूकम्प से प्रभावित इलाकों में अनिवार्य वस्तुओं की आपूर्ति करना
- मुसीबत में फंसे लोगों की खोज और बचाव
- अन्य देशों के लिए भी तटीय और समुद्री क्षेत्र की मैपिंग तथा हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण करना

4.3. 1. भारतीय वायु सेना की पांच आप्रेशनल कमाण्ड हैं।

2. तीन फ्लाईट्स से एक स्कवाड्रन बनता है। किसी स्कवाड्रन में 18 जहाज होते हैं जिसका मुखिया एक कमांडिंग आफिसर होता है जिसका रैंक विंग कमाण्डर होता है। यद्यपि ट्रांस्पोर्ट स्कवाड्रन का मुखिया एक ग्रुप कैप्टन होता है।